ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBIL04292
RNI REG. NO. UPBIL/2014/66218 **PP. No.- 157-159**
I S S N NO. - 2347 – 2944 (Print)
e-I S S N NO.- 2582 – 2454 (Online)
Vol.-20, No.- I, Issues-39, YEAR- Jan.-March 2026

मिथिला में सांस्कृतिक विधि–व्यवहार : परिवर्तन तथा गतिशीलता–दरभंगा जिला के संदर्भ में समाजशास्त्रीय अध्ययन

डॉ0 संजीव कुमार झा
व्याख्याता–समाजशास्त्र विभाग, पार्वती लक्ष्मी महिला महाविद्यालय, झंझारपुर, मधुबनी (बिहार) भारत

Received-27.01.2026, Revised-03.02.2026, Accepted-09.02.2026 **E-mail: Snjeevkumar1981@gmail.com**

सारांशः ***मिथिला की परम्परायें, रश्म–रिवाज, विधि–व्यवहार अद्वितीय है। यह सच है कि परम्परा का संबंध भूतकाल से है अर्थात हमारे पूर्वजों द्वारा बनाये गये रीति–रिवाजों विश्वासों व कार्य करने के तरीकों को जो हमें विरासत में मिले हैं; परम्परा के अन्तर्गत आते हैं। परम्परा किसी भी परिवर्तन के प्रति उदासीन होती है और परिवर्तन में बाधक होती है। परम्परा में शक्ति भी है और जड़ता का तत्त्व भी। यह माना जाता है कि परम्परागत रीति–रिवाजों की उपयोगिता ऐतिहासिक रूप से प्रमाणित है। परम्परा के साथ प्रायः धार्मिक विश्वास भी जुड़े रहते हैं। यह माना जाता है कि परम्पराएँ ईश्वर–प्रदत्त हैं। परम्परा में सकारात्मक व नकारात्मक दोनों ही तत्त्व निहित हैं। सामाजिक जीवन के कतिपय आयाम संचयी अनुभवों के आधार पर शाश्वत है। इनको विभिन्न परिस्थितियों की कसौटी पर खरा माना गया है। अतः पीढ़ी–दर–पीढ़ी हस्तांतरित होते रहने से समाज का सुसंगठन विद्यमान रहता है। पिछले कई दशकों में मिथिला की सामाजिक तथा सांस्कृतिक संरचना में तीव्र परिवर्तन हुआ है। परिवर्तन की प्रक्रिया तेज है तथा मिथिला की संस्कृति एक नये मोड़ पर दिखाई पड़ रही है। इन परिवर्तनों का स्पष्ट प्रभाव मिथिला के सांस्कृतिक विधि व्यवहारों पर भी परिलक्षित होता है।***

कुंजीभूत शब्द– मिथिला, संस्कृति, विधि–व्यवहार, परिवर्तन, उदासीन, परम्परा तथा रीति–रिवाजों, धार्मिक विश्वास, कसौटी।

भूमिका– मिथिला की एक विशिष्ट संस्कृति प्राचीन काल से रही है। साथ ही धार्मिक आस्था भी कूट–कूट कर भरी पड़ी है। यहाँ के लोग भिन्न–भिन्न देवी–देवताओं की पूजा–अर्चना भक्ति भाव से करते आ रहे हैं। मिथिला में विभिन्न संस्कारावसर पर कई गीतों का प्रयोग होता रहा है। जन्म, मुण्डन, अन्नप्राशन चूड़ाकरण, कर्णवेध, उपनयन, वेदारम्भ, विवाहादि के आधार पर प्रयुक्त गीतों की संगीतिक महत्ता सर्वस्वीकृत है। भिन्न–भिन्न अवसरों पर भिन्न–भिन्न प्रकार के अड़िपन व आलेपन का प्रयोग किया जाता है। जिन्हें मिथिला के घरों की स्त्रियाँ भली–भाँति जानती है यह विलक्षणता यहाँ की आम स्त्रियों में अपनी चिरन्तन संस्कृति के प्रभाव से पायी जाती है। जैसे विवाह में मौहक (महुअक) के अवसर पर दो पुरनी के पत्तों का आकार जिनमें एक पत्ते के साथ दूसरे पत्ते का परस्पर संबंध दर्शाया जाता है। जो वर–वधू युगल का अविच्छिन्न संबंध का द्योतक है। इसी प्रकार कोजगरा में लक्ष्मी पूजा के संबंध का अरिपन मखाने के तीन पत्तों के आकार का। पृथ्वी पूजा में त्रिकोणयंत्राकार। देवोत्थान का अरिपन। तुलसी पूजा का अरिपन। विवाह के अनन्तर एक वर्ष तक प्रतिदिन किया जानेवाला अरिपन आदि। अर्थात वर्ष भर में होने वाले प्रायः सभी पर्वों पर अलग–अलग भिन्न–भिन्न प्रकार के अरिपन लिखने की परिपाटी मिथिला की स्त्रियों में सांस्कृतिक रूप से चली आ रही है। सत्यनारायण भगवान की पूजा के अवसर पर चतुर्भुज भगवान का द्योतक चौशङ्ख अरिपन भी मार्मिक है।

मैथिल शैली के चित्र केवल भूमि को सजाने अथवा दीवार को सुन्दर बनाने के लिए ही नहीं बनाए जाते हैं, बल्कि ये सब पुराण और शास्त्रों के गूढ़ तत्त्वों पर आधारित हैं। इनकी रेखाएँ, बिन्दु तथा रंग कोई–न–कोई विशेष तात्पर्य रखते हैं। रंगीन भित्ति चित्र, जो खासकर कन्याओं तथा पुरुषों के विवाह के समय बनाए जाते हैं, विशेष महत्त्व रखते हैं। मिथिला में तुसारी पूजा का भी विशेष महत्त्व है। कुमारियों के शरीर में आलस्य न आने पाये, ताकि मिथिला की संस्कृति के अनुकूल विवाह होने के पश्चात संकोचशील बने रहने के लिए पति के शयनागार से सवेरे उठकर आने में आलस्य का अनुभव न करे और गृहस्थी के कार्यों में सबेरे से लग जाएँ, ताकि पति–सेवा के किसी भी कार्य में विलम्ब न हो। क्योंकि भारतीय संस्कृति में स्त्री के लिए पति–सेवा से बढ़कर कोई धर्म नहीं माना गया है।

मिथिला में उपनयन अथवा विवाह के संस्कार के एक दिन पूर्व अर्थात् 'कुमरम' के दिन बरुआ अथवा कन्या को बड़े समारोह के साथ यहाँ की श्रेष्ठा स्त्रियों द्वारा उबटन, जो सरसों के तेल, जौ के आँटे तथा अन्य कई पदार्थों को मिलाकर बनाया जाता है, उससे मालिश कर शरीर को स्वच्छ तथा पवित्र बनाने की प्रथा चली आ रही है। कई सांस्कृतिक अवसरों पर यथा विवाह के पश्चात् कोहबर–घर में वर–वधू के बैठने तथा सोने के लिए दिए गए सबरंग पटिया के नीचे जमीन पर चुमाओन जो किसी व्यक्ति को आशीर्वाद देने के समय की एक प्रथा है, के समय उसके बैठने के लिए दिए गए पीढ़े के ऊपर आदि कई अवसरों में लिखा जाता है। यह एक 'रक्षा यंत्र' के रूप में माना जाता है और इसीलिए दृष्टि–दोष या अन्य प्रकार के घातक मंत्र प्रयोग आदि से उन्हें बचाने के तात्पर्य से लिखा जाता है।

स्त्रियों का 'दशपात' अरिपन भी विशेष महत्त्व का है। मिथिला में कन्याओं के मुण्डन, कर्णवेध, विवाह आदि संस्कारों के अवसर पर कुलदेवता के घर अथवा मंडप पर उस कार्य के सम्पादन होने के समय घर की ललनाओं के द्वारा अथवा पितृकुल की कन्याओं के द्वारा लिखा जाता है, जिसमें कन्याओं के द्वारा ही लिखा जाना श्रेयस्कर समझा जाता है। यह दशपात अरिपन मिथिला की स्त्रियों के सांस्कृतिक कार्यों के अवसर पर लिखे जाने की परिपाटी चली आई है, ताकि वे अपने कर्त्तव्य को न भूलें और, स्त्री–धर्म का पालन सदा करती रहें, जिससे मिथिला की संस्कृति का कभी लोप न होने पाए।

मधुश्रावणी पूजा का अरिपन, जो मिथिला में नव विवाहित वर–वधुओं के लिए एक प्रसिद्ध त्यौहार माना जाता है, प्रारंभिक समय से स्त्रियों के द्वारा लिखने की परिपाटी चली आ रही है। इस अवसर पर पुराणों में वर्णित पाताल लोक के नागों की पूजा होती है। यह श्रावण कृष्ण पञ्चमी, जो नाग पञ्चमी के नाम से प्रसिद्ध है, से प्रारम्भ होकर श्रावण शुक्ल तृतीया तक चलती है। इन दिनों के बीच वधू को नित्य इस अरिपन पर भिन्न–भिन्न नागों की पूजा करनी पड़ती है और प्रत्येक दिन पूजा के समय वधू को वयोवृद्धा स्त्रियों के द्वारा अनेक तरह की कहानियाँ सुनाई जाती है, जिनका तात्पर्य सतीधर्म पालन से रहता है। बरसात के मौसम में मधुश्रावणी पूजा के अवसर पर नागों की पूजा के यथार्थ का तात्पर्य यह है कि सर्पों की आराधना कर तथा लावा–दूध आदि भोग के रूप में वे भोजन करा उन्हें संतुष्ट कर दिया जाय, ताकि वे आनन्द से अपने बिलों में जाकर आराम करे और मनुष्यों को सर्पदंश का भय न रहे। इस तरह जनकल्याण की भावना इस पूजा में छिपी है।

अनुरूपी लेखक/ संयुक्त लेखक

I S S N NO. - 2347 – 2944 (Print)
e-I S S N NO.- 2582 – 2454 (Online)
Vol.-20, No.- I, Issues-39, YEAR- Jan.-March 2026

अध्ययन का उद्देश्य– प्रस्तुत शोध कार्य **मिथिला में सांस्कृतिक विधि–व्यवहार–परिवर्तन तथा गतिशीलता** से संबंधित है। इस अध्ययन के प्रमुख उद्देश्य इस प्रकार हैं:

क. मिथिला के सांस्कृतिक विधि–व्यवहार में होने वाले परिवर्तनों का पता लगाना।

ख. मिथिला के सांस्कृतिक विधि–व्यवहारों के केन्द्र में महिलाओं की सामाजिक प्रस्थिति तथा उनकी भूमिका का अध्ययन करना, तथा

ग. मिथिला के सांस्कृतिक विधि–व्यवहारों में परम्पराओं की स्थिति का अध्ययन करना।

अध्ययन क्षेत्र एवं अध्ययन पद्धति– प्रस्तुत अध्ययन के लिए बिहार राज्य के दरभंगा जिला का चयन किया गया है। दरभंगा जिला से 100 उत्तरदाताओं का चयन उद्देश्यपूर्ण निदर्शन पद्धति के आधार पर किया गया है तथा उत्तरदाताओं से साक्षात्कार अनुसूची के माध्यम से साक्षात्कार प्रविधि द्वारा तथ्यों का संकलन किया गया है। तत्पश्चात् विभिन्न तालिकाओं के माध्यम से तथ्यों का विश्लेषण किया गया है।

तथ्य विश्लेषण– सर्वप्रथम अध्ययन क्षेत्र से चयनित किये गये उत्तरदाताओं की पृष्ठभूमि इस प्रकार है:

तालिका संख्या–1 **आयु के आधार पर उत्तरदाताओं का परिचय**

आयु समूह	उत्तरदाता	प्रतिशत
18 – 25	20	20
26 – 33	21	21
34 – 41	25	25
42 – 49	18	18
50 से अधिक	16	16
	कुल –	**100**

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट है कि अध्ययन क्षेत्र से चयनित किये गये उत्तरदाताओं में 20 प्रतिशत 18–25 आयु वर्ग के, 21 प्रतिशत 26–33 आयु वर्ग के, 25 प्रतिशत 34–41 आयु वर्ग के, 18 प्रतिशत 42–49 आयु वर्ग के तथा 16 प्रतिशत 50 से अधिक आयु वर्ग के उत्तरदाता हैं।

उत्तरदाताओं से प्राप्त तथ्यों का विश्लेषण इस प्रकार है:

तालिका संख्या–2 **क्या आपको लगता है कि मिथिला के सांस्कृतिक विधि–व्यवहारों में परिवर्तन हुआ है ? हाँ/नहीं**

आयु–समूह	अभिमत				कुल उत्तरदाता
	हाँ		नहीं		उत्तरदाता
	संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत	
18 – 25	12	60	08	40	20
26 – 33	14	66	07	33	21
34 – 41	20	80	05	20	25
42 – 49	12	66	06	33	18
50 से अधिक	12	75	04	25	16
कुल –	**70**	**70**	**30**	**30**	**100**

उपर दिये गये तालिका के विश्लेषण से स्पष्ट है कि पूछे गये प्रश्न क्या आपको लगता है कि मिथिला के सांस्कृतिक विधि–व्यवहारों में परिवर्तन हुआ है, तो 70 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने इस प्रश्न के सहमति में अपना जबाव दिया है वहीं 30 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने कहा कि अभी मिथिला के सांस्कृतिक विधि–व्यवहारों में परिवर्तन नहीं हुआ है।

तालिका संख्या–3 **क्या मिथिला के विधि–व्यवहार लोक परम्पराओं पर आधारित हैं? हाँ/नहीं**

आयु–समूह	अभिमत				कुल उत्तरदाता
	हाँ		नहीं		उत्तरदाता
	संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत	
18 – 25	16	80	04	20	20
26 – 33	18		03		21
34 – 41	20	80	05	20	25
42 – 49	15		03	03	18
50 से अधिक	16	100	00	00	16
कुल –	**85**	**85**	**15**	**15**	**100**

उपर दिये गये तालिका के विश्लेषण से स्पष्ट है कि पूछे गये प्रश्न क्या मिथिला के विधि–व्यवहारा लोक परम्पराओं पर आधारित हैं तो 85 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने इस प्रश्न के सहमति में अपना जबाव दिया और कहा कि मिथिला के विधि–व्यवहार लोक परम्पराओं पर आधारित हैं, वहीं 15 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने इस प्रश्न के असहमति में अपना जबाव दिया है।

तालिका संख्या–4 **क्या मिथिला के विधि–व्यवहारों में महिलाओं की भूमिका अधिक है ? हाँ/नहीं**

आयु–समूह	अभिमत				कुल उत्तरदाता
	हाँ		नहीं		उत्तरदाता
	संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत	
18 – 25	20	100	00	00	20
26 – 33	21	100	00	00	21
34 – 41	25	100	00	00	25
42 – 49	18	100	00	00	18
50 से अधिक	16	100	00	00	16
कुल –	**100**	**100**	**00**	**00**	**100**

I S S N NO. - 2347 – 2944 (Print)
e–I S S N NO.- 2582 – 2454 (Online)
Vol.-20, No.- I, Issues-39, YEAR- Jan.-March 2026

उपर दिये गये तालिका के विश्लेषण से स्पष्ट है कि पूछे गये प्रश्न क्या मिथिला के विधि–व्यवहारों में महिलाओं की भूमिका अधिक है तो 100 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने इस प्रश्न के सहमति में अपना जबाव दिया है।

तालिका संख्या–5 क्या विवाह तथा मुण्डन संस्कारों में लोकगीत का विशेष महत्व है ? हाँ/नहीं

आयु–समुह	अभिमत				कुल उत्तरदाता
	हाँ		नहीं		उत्तरदाता
	संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत	
18 – 25	16	80	04	20	20
26 – 33	18		03		21
34 – 41	20	80	05	20	25
42 – 49	15		03	03	18
50 से अधिक	16	100	00	00	16
कुल –	**85**	**85**	**15**	**15**	**100**

उपर दिये गये तालिका के विश्लेषण से स्पष्ट है कि पूछे गये प्रश्न क्या विवाह तथा मुण्डन संस्कारों में लोकगीत का विशेष महत्व है तो 85 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने इस प्रश्न के सहमति में अपना जबाव दिया और कहा कि मिथिला के विधि–व्यवहार लोक परम्पराओं पर आधारित हैं वहीं 15 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने इस प्रश्न के असहमति में अपना जबाव दिया है।

निष्कर्ष– मिथिला में इस समय भी शास्त्रानुकूल उस समय की प्राचीन संस्कृति ही विद्यमान है, जो कुछ वर्षों के भीतर ही आज के समय के प्रभाव में पड़ अब कहीं–कहीं धीरे–धीरे बदलने लगी है। परन्तु यहाँ के अधिकांश घरों में अब तक अक्षुण्ण है। परिवर्तन प्रकृति का नियम है। भारतीय समाज में विशेषकर जातीय संरचना में होने वाले अनेक परिवर्तनों का कारण संस्कृतीकरण माना है। संस्कृतीकरण के तहत कोई निम्न स्तरीय हिन्दू जाति या कोई जन जाति अथवा अन्य समूह किसी उच्च स्तरीय और प्रायः 'द्विज' जाति का अनुकरण करती हुई अपने रीति–रिवाज, कर्मकांड विचारधारा और जीवन पद्धति को बदलती है। आमतौर पर ऐसे परिवर्तनों के बाद वह जाति अपने परम्परागत जातीय स्थान से ऊँचे स्थान का दावा करने लगती है। आधुनिक समय में ब्राह्मण जाति में अद्योगामी सामाजिक गति शीलता देखने को मिलती है। इसीलिए आधुनिक सामाजिक संरचना में ब्राह्मण जाति की सामाजिक स्थिति अब उतनी ऊँची नहीं है, जितनी कि पहले थी। वर्तमान युग में आर्थिक और राजनैतिक शक्ति वाले समूहों की महत्ता बढ़ गयी है। आज नये व्यवसायों, नौकरी के अवसरों तथा समान राजनैतिक अधिकारों ने नीची जाति के सदस्यों को उन्नति का अवसर दिला है, जिसके फलस्वरूप एक ही कार्यालय में या एक ही व्यवसाय या सरकार में निम्न जाति के सदस्यों को ऊँचे स्थान मिले हुए हैं और ब्राह्मण उनके अधीन कार्य कर रहे हैं। इससे रीति रिवाज एवं प्रथा में काफी परिवर्तन हुए हैं। संक्षेप में, मिथिला में जहाँ सांस्कृतिक विधि–व्यवहार प्रचलित थे, उसमें परिवर्तन की प्रक्रिया तेज है। मिथिला की संस्कृति तथा उसकी संपूर्ण संरचना एक नये मोड़ पर दिखाई पर रही है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. झा, लक्ष्मीनाथ; मिथिला का सांस्कृतिक लोक चित्रकला, मित्रनाथ झा, सरिसब पाही, मधुबनी, 1999.
2. झा, इन्द्र नारायण, मिथिला का भारकर तीर्थ, सूर्यधाम परसा, विदेश प्रकाशन, झारखण्ड, 2011.
3. झा, परमेश्वर; मिथिला तत्व विमर्श, हरिश्चन्द्र झा परमेश्वर पुस्तकालय, तरौनी, दरभंगा, 1949.
4. ठाकुर, उपेन्द्र; मिथिला का इतिहास, मिथिला इंस्टीच्युट, कबड़ाघाट, दरभंगा, 1956.
5. बाशम, ए० एल०; अद्भुत भारत, शिवलाल अग्रवाल एण्ड कम्पनी, आगरा, 1996.
6. मिश्र, दीपनारायण; मिथिला राज्य विमर्श, संतोष प्रकाशन, हनुमानगंज, दरभंगा, 2009.
7. शर्मा, राम प्रकाश; मिथिला का इतिहास, का० सिं० दरभंगा संस्कृत विश्वविद्यालय, दरभंगा, 2002.
8. सिंह, योगेन्द्र; भारतीय परम्परा का आधुनिकीकरण, रावत पब्लिकेशन्स, जयपुर, 2011.

*****